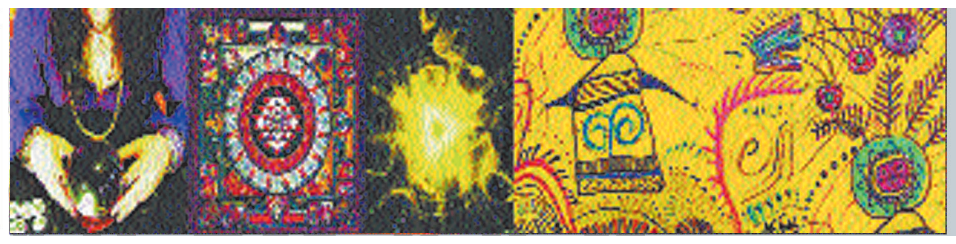

राशि स्वामित्व का सिद्धांत और लग्नेश की स्थिति

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

इस प्रकार राशि-स्वामित्व और लग्नेश की भाव-स्थिति को समझना किसी अंधविश्वास का विषय नहीं, बल्कि यह आकाशीय गतियों, पृथ्वी के घूर्णन और मानव मनोविज्ञान के गहरे संबंध को समझने की एक वैज्ञानिक-दार्शनिक विधि है. वैदिक ज्योतिष का यह सिद्धांत भाग्य बताने से अधिक आत्म-ज्ञान और जीवन-दिशा को समझने का माध्यम है. यही इसकी वास्तविक गहराई और स्थायी प्रासंगिकता है.

वैदिक ज्योतिष में प्रत्येक राशि का एक निश्चित स्वामी ग्रह माना गया है, जिसे राशि-स्वामी कहा जाता है. यह व्यवस्था किसी कल्पना, आस्था या पौराणिक कथा पर आधारित नहीं है, बल्कि प्राचीन भारतीय ऋषियों द्वारा किए गए दीर्घकालीन खगोलीय निरीक्षण, तर्कपूर्ण चिंतन और मानव स्वभाव के सूक्ष्म अध्ययन का परिणाम है.

राशिचक्र वास्तव में आकाश का वह क्षेत्र है जो सूर्य के प्रत्यक्ष पथ, अर्थात् क्रांतिवृत्त, के चारों ओर फैला हुआ है और जिसे बारह समान भागों में विभाजित किया गया है. जब ऋषियों ने नग्न नेत्रों से ग्रहों की गति, उनकी चमक, उनकी गति की तीव्रता, उनका स्थैर्य और विभिन्न आकाशीय क्षेत्रों में उनके प्रभावों का सूक्ष्म अध्ययन किया, तो उन्होंने यह अनुभव किया कि प्रत्येक ग्रह कुछ विशेष राशियों में अधिक सहज, प्रभावी और स्वाभाविक रूप से कार्य करता है. इसी स्वाभाविक सामंजस्य को राशि-स्वामित्व का आधार बनाया गया.

खगोलीय दृष्टि से देखें तो सूर्य और चंद्रमा को सिंह और कर्क राशि का स्वामी बनाया गया, क्योंकि ये दोनों पृथ्वी पर जीवन के मूल आधार हैं और आकाश में सर्वाधिक प्रभावशाली हैं. बुध को मिथुन और कन्या का स्वामी माना गया, क्योंकि वह सूर्य के निकट रहने वाला, द्विस्वभावी और बौद्धिक ग्रह है. शुक्र, जो आकाश का सर्वाधिक दीप्तिमान ग्रह है और संतुलन व सौंदर्य का प्रतीक है, वृषभ और तुला का स्वामी बना. मंगल की लालिमा, तीव्रता और साहसी गति ने उसे मेष और वृश्चिक का स्वामी बनाया.

गुरु, जो सबसे विशाल और विस्तारशील ग्रह है, धनु और मीन का स्वामी बना, जबकि शनि, जो सबसे धीमा, दूरस्थ और अनुशासनात्मक ग्रह है, मकर और कुंभ का स्वामी माना गया. इस प्रकार राशि-स्वामित्व का सिद्धांत प्रत्यक्ष खगोलीय निरीक्षण और प्राकृतिक गुणों पर आधारित है, न कि मनमानी धारणाओं पर.

ज्योतिषीय दृष्टि से राशि-स्वामी उस माध्यम को दर्शाता है जिसके द्वारा किसी राशि की ऊर्जा व्यक्त होती है. प्रत्येक राशि जीवन के एक विशिष्ट दृष्टिकोण और अनुभव-क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है, जबकि उसका स्वामी ग्रह यह बताता है कि वह अनुभव कैसे प्रकट होगा. इसी कारण एक ही ग्रह अलग-अलग राशियों में भिन्न प्रकार से फल देता है. दार्शनिक स्तर पर यह व्यवस्था ऋत अर्थात् ब्रह्मांडीय व्यवस्था के सिद्धांत से जुड़ी हुई है, जिसमें प्रत्येक ग्रह एक कार्यात्मक शक्ति के रूप में कार्य करता है और कर्म के सिद्धांत के अनुसार जीवन में घटनाओं को आकार देता है.

जब इसी सिद्धांत को लग्न पर लागू किया जाता है, तब इसका महत्व और भी बढ़ जाता है. लग्न वह राशि है जो जन्म के समय पूर्व दिशा में उदित हो रही होती है. यह कोई ग्रह नहीं, बल्कि पृथ्वी के घूर्णन से निर्मित एक खगोलीय बिंदु है. लग्न व्यक्ति के शरीर, व्यक्तित्व, स्वास्थ्य, आत्मबोध और जीवन-दृष्टि का प्रतीक है. जिस ग्रह की राशि लग्न में होती है, वही लग्नेश कहलाता है.

सरल शब्दों में, लग्न यह बताता है कि मैं कौन हूँ, और लग्नेश यह बताता है कि यह 'मैं' किस प्रकार और किस दिशा में जीवन को अभिव्यक्त करता है. लग्नेश जिस भाव में स्थित होता है, वह भाव जीवन का वह क्षेत्र बन जाता है जहाँ व्यक्ति अपनी ऊर्जा, चेतना और प्रयासों को सर्वाधिक लगाता है. प्रथम भाव में लग्नेश होने पर व्यक्ति आत्मकेंद्रित, आत्मविश्वासी और स्वतंत्र प्रवृत्ति का होता है. दूसरे भाव में यह पहचान परिवार, धन और मूल्यों से जुड़ जाती है. तीसरे भाव में साहस, पराक्रम और संचार प्रमुख हो जाते हैं. चौथे भाव में मानसिक शांति, गृहस्थी और भावनात्मक सुरक्षा जीवन का केंद्र बनती है. पाँचवें भाव में बुद्धि, शिक्षा, सृजनशीलता और संतान से व्यक्ति अपनी पहचान बनाता है.

छठे भाव में संघर्ष, सेवा और समस्याओं से जूझना जीवन का प्रमुख अनुभव बन जाता है. सातवें भाव में लग्नेश होने पर व्यक्ति स्वयं को संबंधों और समाज के माध्यम से समझता है. आठवें भाव में गहन परिवर्तन, रहस्य और अनुसंधान से आत्मविकास होता है. नौवें भाव में धर्म, दर्शन, आस्था और उच्च ज्ञान जीवन की दिशा तय करते हैं. दसवें भाव में कर्म, पद, प्रतिष्ठा और उत्तरदायित्व व्यक्ति की पहचान बनते हैं. ग्यारहवें भाव में लाभ, आकांक्षाएँ और सामाजिक संपर्क महत्वपूर्ण हो जाते हैं. बारहवें भाव में लग्नेश होने पर व्यक्ति अंतर्मुखी, आध्यात्मिक और त्याग-प्रधान जीवन की ओर उन्मुख होता है.

पुत्रदा एकादशी पर विष्णु पूजा से पूरी होगी मुराद

हिंदू धर्म में एकादशी व्रत को मोक्षदायिनी तिथियों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है. विशेष रूप से पौष पुत्रदा एकादशी उन दंपतियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है, जो संतान सुख की कामना करते हैं. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन श्रद्धा और नियमपूर्वक भगवान विष्णु का व्रत करने से सूनी गोद भरती है और घर में योग्य, तेजस्वी व दीर्घायु संतान का आगमन होता है.

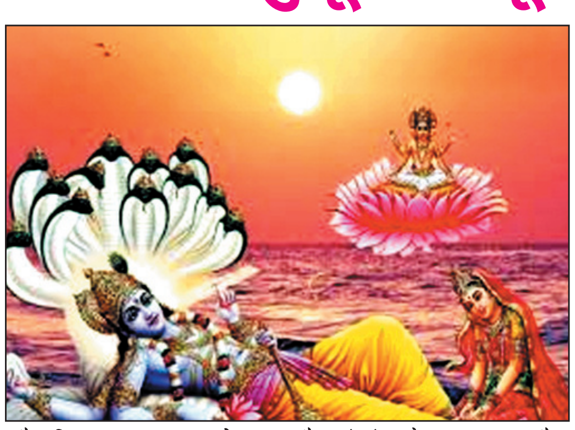

पौष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को आने वाला यह व्रत साल में केवल एक बार आता है और इसका पुण्य कई यज्ञों के समान बताया गया है. पद्म पुराण में वर्णित कथाओं के अनुसार, इस व्रत का प्रभाव न केवल वर्तमान जीवन बल्कि आने वाली पीढ़ियों तक पड़ता है. यही कारण है कि इसे वंश वृद्धि और पितृ कृपा प्राप्त करने का श्रेष्ठ साधन माना गया है. पौष पुत्रदा एकादशी 2025 इस बार विशेष योग में पड़ रही है, जिससे इसका धार्मिक महत्व और भी बढ़ गया है.

सही विधि, शुभ मुहूर्त और पारण नियमों के साथ किया गया यह व्रत जीवन की बड़ी मनोकामना को पूर्ण कर सकता है. पंचांग के अनुसार, पौष पुत्रदा एकादशी 2025 का व्रत 30 दिसंबर को रखा जाएगा. इस दिन भरणी नक्षत्र और सिद्ध योग का दुर्लभ संयोग बन रहा है, जो संतान प्राप्ति के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है. मान्यता है कि इस दिन भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की संयुक्त पूजा करने से दांपत्य जीवन में सुख, शांति और संतान सौभाग्य की प्राप्ति होती है.

धार्मिक ग्रंथों में उल्लेख है कि राजा सुकेतुमान ने इसी व्रत के प्रभाव से योग्य पुत्र प्राप्त किया था. तभी से यह व्रत उन दंपतियों के लिए वरदान माना जाता है, जो लंबे समय से संतान सुख से वंचित हैं. व्रत के दौरान संयम, सात्विक आहार और मन की शुद्धता का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है.

एकादशी के दिन चावल का त्याग, तुलसी पूजन, विष्णु मंत्र जाप और दान करने से व्रत का पूर्ण फल प्राप्त होता है. वहीं, द्वादशी के दिन सही समय पर पारण करना भी उतना ही जरूरी है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, नियमों के साथ किया गया पौष पुत्रदा एकादशी व्रत जीवन की सबसे बड़ी कामना को साकार कर सकता है.

जानें हिंदू नववर्ष की परंपरा और महत्व

19 मार्च से शुरू होगा विक्रम संवत 2083

दुनियाभर में भले ही लोग 1 जनवरी को नया साल मनाते हों, लेकिन भारतीय संस्कृति में नए साल की शुरुआत का आधार पूरी तरह अलग और विशिष्ट है. हिंदू धर्म में नववर्ष केवल कैलेंडर बदलने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि प्रकृति, सृष्टि और जीवन के नए चक्र का प्रतीक माना जाता है.

हिंदू पंचांग के अनुसार, नया वर्ष चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से शुरू होता है, जिसे हिंदू नववर्ष कहा जाता है. साल 2026 में यह पावन अवसर 19 मार्च, गुरुवार को आएगा. इसी दिन से विक्रम संवत 2083 की शुरुआत होगी. धार्मिक दृष्टि से यह दिन अत्यंत शुभ माना जाता है, क्योंकि इसे सृष्टि की रचना का प्रथम दिवस कहा गया है. मान्यता है कि इसी दिन ब्रह्मा जी ने सृष्टि का निर्माण किया था.

हिंदू नववर्ष का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि इसका सीधा संबंध प्रकृति के बदलाव, ऋतु परिवर्तन और खगोलीय गणनाओं से जुड़ा हुआ है. यही कारण है कि इसे नई ऊर्जा, सकारात्मकता और शुभ आरंभ का प्रतीक माना जाता है.

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, हिंदू नववर्ष का संबंध केवल ब्रह्मांड की उत्पत्ति से ही नहीं, बल्कि प्रभु श्रीराम के आदर्श शासन से भी जुड़ा है. लंका विजय के बाद श्रीराम का अयोध्या में राज्याभिषेक इसी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को हुआ था. यही कारण है कि इस दिन को धर्म की अधर्म पर विजय और रामराज्य की स्थापना का प्रतीक माना जाता है. धार्मिक ग्रंथों में उल्लेख है कि इस तिथि से सतयुग का आरंभ हुआ था. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, इसी समय सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है, जिससे नए कालचक्र की गणना शुरू होती है. यह खगोलीय घटना नववर्ष को वैज्ञानिक आधार भी प्रदान करती है.

भारत के अलग-अलग राज्यों में हिंदू नववर्ष को विभिन्न नामों से मनाया जाता है. महाराष्ट्र में इसे गुड़ी पड़वा, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में उगादि, जबकि उत्तर भारत में इसी दिन से चैत्र नवरात्रि की शुरुआत होती है. हर परंपरा अलग होते हुए भी सभी का उद्देश्य एक ही है—जीवन में शुभता, संतुलन और नई शुरुआत का स्वागत करना.

दिशा दोष से बिगड़ सकता है स्वास्थ्य और धन

वास्तुशास्त्र केवल घर बनाने की कला नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित रखने का विज्ञान है. मान्यता है कि घर की आठों दिशाएं अलग-अलग ग्रहों और पंचतत्वों से जुड़ी होती हैं, जिनका सीधा प्रभाव व्यक्ति के स्वास्थ्य, संबंध, मानसिक स्थिति और आर्थिक जीवन पर पड़ता है. यदि किसी दिशा में दोष उत्पन्न हो जाए, तो उसका असर धीरे-धीरे पूरे परिवार पर दिखने लगता है.

अक्सर लोग यह समझ नहीं पाते कि बिना किसी स्पष्ट कारण के नौकरी में रुकावट, धन हानि, बार-बार बीमारी, पारिवारिक तनाव या मानसिक अशांति क्यों बढ़ रही है. वास्तु विशेषज्ञों के अनुसार, इसके पीछे घर की दिशाओं में मौजूद असंतुलन बड़ी वजह हो सकता है.

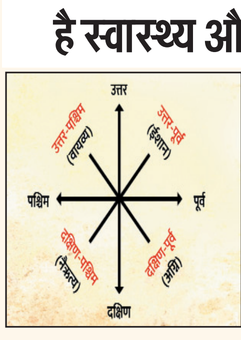

पूर्व से लेकर ईशान कोण तक हर दिशा का अपना महत्व है और उसका संबंध किसी न किसी ग्रह से माना गया है. सही दिशा में सही वस्तु रखने से जहां सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, वहीं दिशा दोष होने पर वही ऊर्जा नकारात्मक रूप ले लेती है. ऐसे में समय रहते दिशा दोष को पहचानना और सुधार करना बेहद जरूरी हो जाता है. वास्तुशास्त्र के अनुसार, पूर्व दिशा सूर्य ग्रह से जुड़ी होती है और यह स्वास्थ्य व आत्मबल का प्रतीक मानी जाती है. इस दिशा में दोष होने पर मानसिक कमजोरी, सरकारी अड़चनें और नेत्र संबंधी रोग बढ़ सकते हैं. वहीं आग्नेय दिशा, जो शुक्र ग्रह के अधीन होती है, वैवाहिक सुख और भौतिक सुविधाओं से जुड़ी है. यहां दोष होने पर स्त्री सुख में कमी और रोगों की आशंका रहती है. दक्षिण दिशा मंगल ग्रह के प्रभाव में होती है और साहस व शक्ति का प्रतीक है. दोष होने पर क्रोध, दुर्घटनाएं और रक्त विकार बढ़ते हैं.

तुलसी पूजा में की गई ये भूलें बढ़ा सकती हैं परेशानी

वास्तु शास्त्र के अनुसार, तुलसी का पौधा घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है और नकारात्मक शक्तियों को दूर रखता है. मान्यता है कि जिस घर में तुलसी जी की नियमित पूजा होती है, वहां मां लक्ष्मी का स्थायी वास होता है.

सनातन परंपरा में जड़ और चेतन—दोनों में ईश्वर का वास माना गया है. नदियां, पर्वत, पत्थर और यहां तक कि पेड़-पौधों को भी देवतुल्य माना गया है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, पौधों में नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करने की विशेष शक्ति होती है. इन्हीं पौधों में तुलसी जी का स्थान सबसे ऊंचा माना गया है.

तुलसी का पौधा न सिर्फ औषधीय गुणों से भरपूर होता है, बल्कि इसमें दैवीय शक्ति का भी वास माना जाता है. पुराणों के अनुसार, तुलसी को भगवान विष्णु की पत्नी कहा गया है और वास्तु शास्त्र में इन्हें मां लक्ष्मी का स्वरूप माना गया है. यही वजह है कि लगभग हर हिंदू घर में तुलसी जी की पूजा की जाती है. हालांकि, वास्तु और ज्योतिष शास्त्र में यह भी बताया गया है कि तुलसी जी की पूजा करते समय अगर कुछ नियमों की अनदेखी की जाए, तो इसका नकारात्मक प्रभाव घर की सुख-शांति और समृद्धि पर पड़ सकता है. तुलसी जी को सनातन धर्म में अत्यंत पूजनीय माना गया है. वास्तु शास्त्र के अनुसार, तुलसी का पौधा घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है और नकारात्मक शक्तियों को दूर रखता है. मान्यता है कि जिस घर में तुलसी जी की नियमित पूजा होती है, वहां मां लक्ष्मी का स्थायी वास होता है.

वास्तु शास्त्र में तुलसी के पौधे को घर या आंगन के बीचों-बीच लगाने की सलाह दी गई है. इसके अलावा, शयन कक्ष के पास स्थित बालकनी में भी तुलसी का पौधा रखा जा सकता है. लेकिन तुलसी जी की पूजा करते समय कुछ गलतियां करना बहुत ही अशुभ माना गया है.

नियमित रूप से चढ़ाएं जल

जिस घर में तुलसी जी को रोजाना जल अर्पित किया जाता है और दीपक जलाया जाता है, वहां सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है. इसलिए सुबह स्नान के बाद तुलसी जी को जल अर्पित करना शुभ माना गया है.

इन दिनों न चढ़ाएं जल

वास्तु शास्त्र के अनुसार, रात के समय तुलसी जी को जल नहीं देना चाहिए. मान्यता है कि इस समय माता तुलसी विश्राम करती हैं. इसके अलावा, रविवार और एकादशी के दिन भी तुलसी जी को जल अर्पित करना वर्जित माना गया है.

इस समय न तोड़ें तुलसी के पत्ते

अक्सर लोग बिना समय देखे तुलसी के पत्ते तोड़ लेते हैं, जो धार्मिक दृष्टि से अशुभ माना गया है. मान्यता है कि शाम का समय तुलसी जी के विश्राम का होता है, इसलिए इस समय पत्ते तोड़ना दोषपूर्ण माना जाता है. वास्तु शास्त्र के अनुसार, तुलसी के पत्ते तोड़ने का सबसे शुभ समय ब्रह्म मुहूर्त या सुबह स्नान के बाद बताया गया है. पत्ते तोड़ते समय हाथ साफ हों और मन में श्रद्धा भाव बना रहे.

नए साल में बरसेगी सुख-समृद्धि

नए साल के स्वागत की तैयारियां पूरे देश में जोरों पर हैं, लेकिन धार्मिक आस्था रखने वालों के लिए 1 जनवरी 2026 सिर्फ जश्न का दिन नहीं, बल्कि अत्यंत शुभ संकेतों से भरा हुआ अवसर है. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, नववर्ष 2026 की शुरुआत एक-दो नहीं बल्कि 9 महा शुभ संयोगों के साथ हो रही है, जो पूरे साल सुख, समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का संकेत देते हैं. इस बार नया साल गुरुवार के दिन आरंभ हो रहा है और उसी दिन गुरु प्रदोष व्रत भी पड़ रहा है. ऐसे में भगवान शिव और भगवान विष्णु—दोनों की विशेष कृपा प्राप्त होने की मान्यता है. इसके साथ ही शुभ योग, शुक्ल योग, रोहिणी नक्षत्र और नंदी पर शिववास जैसे दुर्लभ संयोग इस दिन को पूजा-पाठ और नए कार्यों की शुरुआत के लिए अत्यंत मंगलकारी बना रहे हैं.

ज्योतिषाचार्यों का मानना है कि वर्ष का पहला दिन जैसे योगों के साथ शुरू होता है, उसका प्रभाव पूरे साल पर पड़ता है. ऐसे में 1 जनवरी 2026 का यह शुभ संयोग भक्तों के लिए सौभाग्य लेकर आने वाला माना जा रहा है. 1 जनवरी 2026 को पौष माह के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि दिनभर रहेगी और रात 10:22 बजे के बाद चतुर्दशी तिथि प्रारंभ होगी. ये दोनों ही तिथियां भगवान शिव को समर्पित मानी जाती हैं. इसी दिन गुरु प्रदोष व्रत का संयोग बन रहा है, जिसे प्रदोष व्रतों में विशेष फलदायी माना जाता है. नववर्ष का पहला दिन गुरुवार होने के कारण भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा से धन-वैभव में वृद्धि का योग बनता है. इसके साथ ही दिन में शुभ योग और शाम के बाद शुक्ल योग का निर्माण हो रहा है, जो नए कार्यों की शुरुआत के लिए अत्यंत उत्तम माने जाते हैं. सुख-समृद्धि और विकास का प्रतीक माना जाता है.

राशिफल

दिनांक- 28 दिसम्बर 2025 से 03 जनवरी 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित
प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य धनु राशि में, मंगल धनु राशि, बुध वृश्चिक राशि में ता. 28 को 7/5 रात से धनु राशि में, वक्री गुरू कर्क राशि में, शुक्र धनु राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा मीन मेष वृषभ और मिथुन राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव:- इस सप्ताह शनि की गुरू पर दृष्टि एवं मंगल की राहु पर दृष्टि होने से कुछ प्रांतों में प्राकृतिक प्रकोप, हिमपात, कहीं बिजली गिरने की सम्भावना, तूफान आदि से हानि हो सकती है. सूर्य, मंगल, शुक्र, बुध का गुरू के साथ समसप्तम योग बन रहा है, जिसके प्रभाव से घी, गुड, सोना, चांदी, अनाज दाल में तेजी बनेगी.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

मंगलवार	30 दिसम्बर को	पुत्रदा एकादशी व्रत
गुरूवार	01 जनवरी को	प्रदोष व्रत.
शुक्रवार	02 जनवरी को	व्रत पूर्णिमा,
शनिवार	03 जनवरी को	शाकम्भरी यात्रा समाप्त, माघ स्नान व्रत नियम प्रारम्भ, स्नानदान व्रत पूर्णिमा

मेष

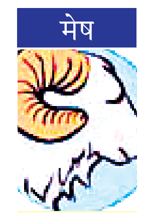

लंबे समय से चले आ रहे अधूरे कार्य पूरे हो सकते हैं, कामकाज में बेहतर सफलता मिलेगी, आपका सारा ध्यान बच्चों की पढाई और केरियर में रहेगा, आप नये अनुबंधों में शामिल हो सकते हैं, साझेदारी से लाभ होगा, आपके सहकर्मियों का रवैया आपके लिये अच्छा रहेगा, प्रणय संबंधों में मधुरता आयेगी, दूर दराज की यात्रा और निवेश का योग बन सकता है, नये वाहन खरीदने की

वृषभ

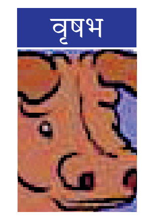

धन संबंधी मामलों में सावधानी रखें, दौड़धूप करने से अनुकूल सफलता मिलेगी, भावुकता में फैसला लेने से बचें, धार्मिक यात्रा होगी, आंख मूंदकर दूसरों की बात न मानें, सप्ताह के मध्य प्रभावशाली व्यक्तियों से भेंट होगी, जो आपको महत्वपूर्ण मामलों में उचित सलाह दे सकते हैं, आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, स्थायी संपत्ति में लाभ का योग है.

मिथुन

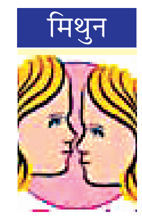

स्वास्थ्य को लेकर छोटी मोटी परेशानी हो सकती है, धीरे धीरे सुधार होगा, कामकाज की अधिकता से आप घर के कार्यो पर ध्यान नहीं दे सकेंगे, नये अनुबंधों पर हस्ताक्षर करने के पूर्व एक बार पुन: विचार कर लें, कानूनी मामलों में सावधानी रखें, दायित्वों में वृद्धि होगी, यात्रा प्रवास में उठाईगीरों से नुकसान हो सकता है, भूमि भवन पर खर्च होगा.

कर्क

व्यवसायिक स्तर पर आप व्यस्त रहेंगे, व्यक्तिगत संबंध सुधारने पर बल देंगे, अपनी बचत को लेकर विचार विमर्श करेंगे, विरोधी वर्ग शांत रहेगा, परिवार में अतिरिक्त जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पड़ सकता है, सामाजिक कार्यो में आप मित्रों के साथ सम्मिलित हो सकते हैं, राजनेताओं को सफलता प्राप्त करने के लिये सावधानी पूर्वक अपनी योजना बनानी चाहिये.

सिंह

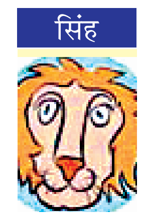

अभी आपका समय तनावपूर्ण रह सकता है, कार्य करने में अड़चनों का सामना करना पड़ेगा, घरेलू विवादों में सावधानी रखें, समस्या का हल होगा, सप्ताह के मध्य कामकाज को सीमित रखें, प्रयास और परिश्रम पर ध्यान दें, सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा, नये समझौते सहायक होंगे, सप्ताह के उत्तरार्ध में नई कार्य योजना शुरू करने से बचें.

कन्या

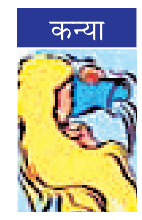

आत्म विश्वास बढ़ेगा, फिर भी वित्तीय मामलों मं आप काफी सोच समझकर निर्णय लें, अन्यथा परेशानी होगी, निर्णय लेने से पहिले सोच विार अवश्य करें, संतान पक्ष के लिये समय अनुकूल है, हर मसले पर पारिवारिक दृष्टिकोण से विचार करें, जधनु जायजाद के मामलों में तनाव हो सकता है, नये संपक्र पुराने रिश्ते जोड़ने में मदद करेंगे.

तुला

लंबे संघर्ष के बाद आप सफलता व अपनी पहचान बनाने में कामयाब होंगे, सार्थक संबंध और संवाद आपको सफलता दिलायेगा, चुनौतियों का मुकाबला होगा, किसी नई कार्य योजना को शुरू करने से बचें, किसी मित्र के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा, सप्ताह के अन्त में नियोजित कार्यक्रम अचानक परिवर्तन हो सकता है.

वृश्चिक

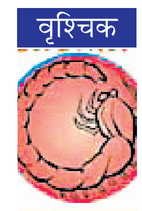

आपको अपने कार्य के तरीकों में थोड़ा परिवर्तन करना होगा, अधिकारी व सहकर्मी आपकी तारीफकरेंगे, बढ़ते हुये खर्चो को पूरा करने के लिये आय के नये स्त्रोत ढूंढने का प्रयास करेंगे, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, व्यवसायिक क्षेत्र में सहयोगियों के साथ चतुराई से कार्य करें, प्रसिद्धि मिल सकती है, आपको गुप्त शत्रुओं से सदैव सतर्कता रखना हितकर है.

धनु

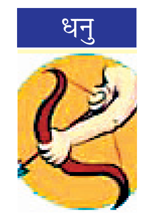

इस सप्ताह आप जो कुछ भी करेंगे, वह सफल होगा, पुरानी योजना को नई दिशा देकर लाभ कमा सकते हैं, आपको फिर से अपनी प्राथमिकताएं तय करनी पड़ सकती हैं, स्वास्थ्य पर ध्यान दें, आप ज्यादा खुश रहने की कोशिश करेंगे, विपरीत परिस्थितियों में आपके करीबी रिश्तेदार आपकी मदद करेंगे, दाम्पत्य जीवन में मधुरता आयेगी, रोगी का स्वास्थ्य सुधरेगा.

मकर

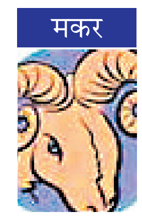

नये जोश व उत्साह का समय है, कामकाज में आशा से अधिक लाभ एवं सफलता मिलेगी, कारोबार में नये संगठन लाभदायक हो सकते हैं, नौकरी में तरक्की होगी, कोई पुराना व्यक्ति अचानक आपसे मुलाकात करेगा, सप्ताह का उत्तरार्ध आमोद प्रमोद का रहेगा, कोई वैवाहिक कार्य जो काफी समय से रूका है, इस सप्ताह अंतिम रूप धारण कर सकता है.

कुम्भ

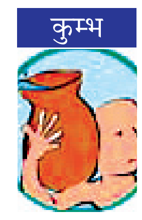

परिवार एवं राजकीय कार्य के सिलसिले में यात्रा होगी, भावनात्मक संबंधों में मधुरता रहेगी, किसी पुराने मामले के उजागर होने से विवाद की संभावना है, स्वास्थ्य के साथ साथ आर्थिक स्थिति सुधरेगी, नया कार्य शुरू करने के लिये फिलहाल समय ठीक नहीं है, समय का ध्यान रखें, अनावश्यक खर्चे से बचें, घरेलू मामलों में पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी और लाभकारी रहेगी.

मीन

कामकाज में सुधार के लिये थोड़ी जोखिम उठानी पड़ सकती है, आपका सारा ध्यान कामकाज को जल्दी निपटाने का रहेगा, लोगों से मिलकर उनसे सीखने और अपनी कमजोरी दूर करने का प्रयास करें, परिवार के प्रति आपका सहयोगात्मक रूख रहेगा, भौतिक सुख साधनों की वृद्धि होगी, तकनीकी क्षेत्र में अच्छे अवसर मिलेंगे.